Kya Tangdasti Bhi Nemat Hai ? (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 353
Weekly Booklet : 353

क्या तंगदस्ती भी ने'मत है ?

सफ़ह़ात 18

- इन्सान किस लिये पैदा किया गया ? 02
- जंगल में घी और शहद की तमन्ना 05
- तंगदस्ती की शिकायत करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश 09
- दो चीज़ें जवान रहती हैं 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

क्या तंगदस्ती भी ने'मत है ?[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : **"क्या तंगदस्ती भी ने'मत है ?"** पढ़ या सुन ले उस की तंगदस्तियां दूर कर, उस के ह़लाल रिज़्क़ में बरकतें अ़त़ा फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर 10 मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** पाक उस पर 100 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से आज़ाद है और उसे क़ियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा ।

(معجم اوسط، 5/252، حدیث:7235)

शाफ़ेए रोज़े जज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद दाफ़ेए जुम्ला बला तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

1... आशिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के होने वाले मुख़्तलिफ़ ऑडियो बयानात को तह़रीरी सूरत में बनाम **"फ़ैज़ाने बयानाते अ़त्तार"** अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे **"बयानाते अमीरे अहले सुन्नत"** की त़रफ़ से तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! उन बयानात में से अब शो'बा **"हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़"** एक बयान "क्या तंगदस्ती भी ने'मत है ?" को रिसाले की सूरत में मन्ज़रे आ़म पर ला रहा है ।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम अपने मुआ़शरे पर निगाह दौड़ाएं तो हमें अन्दाज़ा होगा कि येह मटियाली ज़मीन, नीला आस्मान, वीरान सह़रा, सर सब्ज़ मैदान, ख़ूब सूरत बाग़ात, लह्लहाते खेत, महक्ते फूल, बहती नहरें, उबलते चश्मे, चमक्ते सितारे, मुख़्तलिफ़ अक़्साम के फल, ख़ूब सूरत चांद, रोशन सूरज, ला जवाब मा'दिनिय्यात, मुख़्तलिफ़ जमादात और बे शुमार ह़ैवानात इन्सान के फ़ाएदे के लिये हैं या'नी येह तमाम चीज़ें इन्सान के लिये बनाई गई हैं चुनान्चे क़ुरआने करीम में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : ﴿هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا﴾ (پ1، البقرۃ:29) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** "वोही है जिस ने जो कुछ ज़मीन में है सब तुम्हारे लिये बनाया।"

इस आयते मुबारका के तह़्त **तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान** में है : तमाम इन्सानों को फ़रमाया गया कि ज़मीन में जो कुछ दरिया, पहाड़, कानें, खेती, समुन्दर वग़ैरा हैं सब कुछ **अल्लाह** करीम ने तुम्हारे दीनी व दुन्यावी फ़ाएदे के लिये बनाया है। दीनी फ़ाएदा तो येह है कि ज़मीन के अ़जाइबात देख कर तुम्हें **अल्लाह** करीम की ह़िक्मतो क़ुदरत की मा'रिफ़त (या'नी पहचान) नसीब हो और दुन्यावी फ़ाएदा येह कि दुन्या की चीज़ों को खाओ पियो और अपने कामों में लाओ जब तक **अल्लाह** करीम की त़रफ़ से कोई मुमानअ़त न हो। तो इन ने'मतों के बा वुजूद तुम किस त़रह़ **अल्लाह** करीम का इन्कार कर सकते हो ? इस आयत से मा'लूम हुवा जिस चीज़ से **अल्लाह** पाक ने मन्अ़ नहीं फ़रमाया वोह हमारे लिये मुबाह़ (या'नी जाइज़) व ह़लाल है। (तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान, पारह : 1, अल बक़रह, तह़्तल आयह : 29, 1/94)

अब ग़ौर त़लब बात येह है कि जब सारी काएनात तो इन्सान के लिये पैदा की गई है, आख़िर इन्सान को किस लिये पैदा फ़रमाया गया है ?

इस सुवाल का जवाब **अल्लाह** करीम कुरआने पाक में कुछ यूं इर्शाद फ़रमाता है : (پ27، الذّٰریٰت:56) ﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** "और मैं ने जिन्न और आदमी इसी लिये बनाए कि मेरी इबादत करें।"

इस आयते मुबारका के तह़्त **तफ़्सीरे सिरातुल जिनान** में है : इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ़ दुन्या त़लब करने और इस त़लब में मुन्हमिक (या'नी गुम) होने के लिये पैदा नहीं किया बल्कि उन्हें इस लिये बनाया है ताकि वोह मेरी इबादत करें और उन्हें मेरी मा'रिफ़त (या'नी पहचान) ह़ासिल हो। (تفسیر صاوی، پ27، الذّٰریٰت، تحت الآیۃ:56، 5/2026) इस आयत से मा'लूम हुवा इन्सानों और जिन्नों को बेकार पैदा नहीं किया गया बल्कि उन की पैदाइश का अस्ल मक़्सद येह है कि वोह **अल्लाह** पाक की इबादत करें।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 27, अज़्ज़ारियात, तह़्तल आयह : 56, 9/511)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस आयते मुबारका की तफ़्सीर से इन्सान का मक़्सदे पैदाइश वाज़ेह़ हो गया कि इन्सान को रब्बे करीम ने अपनी इबादत व पहचान के लिये बनाया मगर अफ़्सोस ! आज हम अपनी ज़िन्दगी के मक़्सद को गोया भुला चुके हैं क्यूं कि जो दुन्या हमारे लिये इम्तिह़ान गाह की ह़ैसिय्यत रखती है, हम उस की मह़ब्बत में ऐसे गुम हुए कि इसी को अपनी ज़िन्दगी का ह़ासिल समझ बैठे। शायद हम येह समझ बैठे हैं कि हमें मालो दौलत जम्अ़ करने के लिये पैदा किया गया है। मालो दौलत की ह़िर्स इस क़दर दिल पर ग़ालिब आ चुकी है कि बन्दा रातों रात अमीरो कबीर बनने के सुहाने ख़्वाब देखता रहता है कि ऐ काश ! पांच लाख

का इन्आ़म लग जाए, ऐ काश ! दस रुपै की टिकट पर तीन लाख का इन्आ़म लग जाए। ह़त्ता कि अमीरो कबीर बनने की धुन इस पर ऐसी सुवार होती है कि इसे जूए जैसी बुरी लत लग जाती है, बेंक बेलेन्स बढ़ाने की ख़ातिर वोह ह़लाल व ह़राम की परवा नहीं करता, इस की बस एक ही रट होती है कि "पैसा हो चाहे जैसा हो।" लिहाज़ा अगर कोई मुसल्मान इस त़रह़ के कामों में मुब्तला हो और आप समझते हैं कि उसे समझाऊंगा तो मान जाएगा तो उस पर शफ़्क़त के साथ इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये, उसे माल की तबाह कारियां बताइये, ह़िर्स व लालच के नुक़्सानात से आगाह कीजिये, उसे सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त व मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत की दा'वत दीजिये बल्कि अपने साथ लाइये और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाइये लेकिन आ़म तौ़र पर येह देखा जाता है कि इस त़रह़ के लोगों को जब कोई समझाता है तो वोह तवज्जोह से बात सुनने के बजाए ग़ाफ़िलों की त़रह़ इधर उधर देखते और सर खुजाते हैं। याद रहे ! कहीं ऐसा न हो आप हिम्मत हार कर उन्हें झाड़ना या डांटना शुरूअ़ कर दें या इन्फ़िरादी कोशिश करने से पीछे हट जाएं, लिहाज़ा हिम्मत मत हारियेगा और नरमी व प्यार से इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखियेगा। **अल्लाह** पाक की रह़मत से उम्मीद है कि اِنْ شَآءَاللّٰه एक न एक दिन उन का दिल भी चोट खा ही जाएगा और वोह भी अपने बुरे इरादों से तौबा कर के सलातो सुन्नत की राह पर आ ही जाएंगे। याद रखिये ! बा'ज़ अवक़ात शैत़ाने लईन तंगदस्ती का ख़ौफ़ दिलाता और ह़लाल व ह़राम की परवा किये बिग़ैर ख़ूब मालो दौलत जम्अ़ करने पर उक्साता है तो ऐसी सूरत में आप **अल्लाह** पाक की ज़ात पर भरोसा फ़रमाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه शैत़ानी वस्वसा दूर होगा और तंगदस्ती का ख़ौफ़

जाता रहेगा। इस ज़िम्न में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का वाक़िआ़ सुनिये और अपने लिये **अल्लाह** पाक की ज़ात पर भरोसा करने का सामान कीजिये चुनान्चे

जंगल में घी और शहद की तमन्ना

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किसी जंगल में थे कि शैत़ान ने उन्हें येह वस्वसा डाला : "आप के पास ज़ादे राह नहीं है और येह जंगल हलाकत ख़ैज़ है, यहां आबादी है न कोई इन्सान।" तो उन्हों ने भी इरादा कर लिया कि वोह इस जंगल को ज़ादे राह के बिग़ैर तै करेंगे और आ़म रास्ता छोड़ कर चलेंगे ताकि किसी इन्सान से सामना न हो और ख़ुद कुछ नहीं खाएंगे यहां तक कि उन के मुंह में घी और शह्द डाला जाए। फिर वोह रास्ते से हट कर जिधर रुख़ था चल पड़े। फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने जितना चाहा मैं चलता रहा, फिर मैं ने देखा कि एक क़ाफ़िला रास्ता भूल कर चला आ रहा है, मैं उन्हें देखते ही ज़मीन पर लैट गया ताकि वोह मुझे देख न सकें मगर वोह चलते रहे ह़त्ता कि मेरे सर पर आ पहुंचे, मैं ने आंखें बन्द कर ली थीं। वोह मेरे क़रीब हो कर कहने लगे : लगता है कि इस का ज़ादे सफ़र ख़त्म हो गया है और भूक प्यास की शिद्दत से बेहोश है, इस के मुंह में घी और शह्द डालो शायद इसे होश आ जाए। फिर वोह घी और शह्द लाए तो मैं ने अपना मुंह और दांत मज़बूत़ी से बन्द कर लिये, पस उन्हों ने छुरी ला कर मेरा मुंह ज़बर दस्ती खोलना चाहा तो मैं हंस पड़ा और मुंह खोल दिया, येह देख कर वोह बोले : क्या तुम पागल हो ? मैं ने कहा : हरगिज़ नहीं और तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं। फिर मैं ने उन्हें शैत़ानी वस्वसे वाला वाक़िआ़ सुनाया। (مختصر منہاج العابدین، ص116)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! येह बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का ही हिस्सा था कि वोह अस्बाब इख़्तियार किये बिग़ैर मह्ज़ **अल्लाह** पाक पर

भरोसा करते हुए अपना सफ़र जारी रखते और शैत़ाने लईन के वस्वसों के मुक़ाबले के लिये तय्यार रहते थे लेकिन हमारे लिये येह हुक्म है कि हम **अल्लाह** पाक पर भरोसा रखें और अस्बाब को भी इख़्तियार करें। इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि पहले लोग शह्द बहुत इस्ति'माल करते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! शह्द की ता'रीफ़ और इस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में भी मौजूद है चुनान्चे पारह 14 **सूरए नह्ल** की आयत नम्बर 69 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस के पेट से एक पीने की रंग बरंगी चीज़ निकलती है उस में लोगों के लिये शिफ़ा है।

इस आयते मुबारका के तह़्त **तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान** में है : उस के पेट से एक पीने की चीज़ या'नी शह्द, सफ़ेद, ज़र्द और सुर्ख़ रंगों में निकलता है, उस में लोगों के लिये शिफ़ा है और येह नाफ़ेअ़ तरीन दवाओं में से है और ब कसरत मा'जूनों में शामिल किया जाता है।

(तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान, पारह : 14, अन्नह्ल, तह़्तल आयह : 69, 5/346, 347)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शह्द इस्ति'माल करना सुन्नत है। हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शह्द पसन्द फ़रमाते थे चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم يُعْجِبُهُ الْحَلْوَاءُ وَالْعَسَلُ या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मीठी चीज़ और शह्द पसन्द फ़रमाते थे। (بخاری، 4/17، حدیث: 5682) इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कद्दू भी बहुत पसन्द थे चुनान्चे **तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान** में है : कद्दू (या'नी लौकी) को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत पसन्द फ़रमाते थे, जैसा

कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कद्दू शरीफ़ पसन्द फ़रमाते थे। (ابن ماجہ، 4/27، حدیث:3302) एक मरतबा किसी ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप कद्दू शरीफ़ बहुत पसन्द फ़रमाते हैं ?" रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हां ! येह मेरे भाई ह़ज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام का दरख़्त है। (تفسیر بیضاوی، پ23، الصافات، تحت الآیۃ:146، 5/27) यूंही सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم भी कद्दू बहुत पसन्द फ़रमाते थे चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान फ़रमाते हैं : एक दरज़ी ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खाने की दा'वत की, मैं भी हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ गया, जव की रोटी और शोरबा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने लाया गया जिस में कद्दू और ख़ुश्क किया हुवा नमकीन गोश्त था, खाने के दौरान मैं ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि पियाले के कनारों से कद्दू की क़ाशें तलाश कर रहे हैं, इसी लिये मैं उस दिन से कद्दू पसन्द करने लगा। (بخاری، 2/17، حدیث:2092) ह़ज़रते अबू त़ालूत رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवा, वोह कद्दू खा रहे थे और फ़रमा रहे थे : ऐ दरख़्त ! तेरी क्या शान है, तू मुझे किस क़दर पसन्द है, (और येह मह़ब्बत सिर्फ़) इस लिये (है) कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुझे मह़बूब रखा करते थे। (ترمذی، 3/336، حدیث:1856)

कद्दू के त़िब्बी फ़वाइद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! त़िब के माहिरीन ने लौकी शरीफ़ के बहुत से त़िब्बी फ़वाइद भी बयान किये हैं, आइये ! सात त़िब्बी फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिये : ﴿1﴾ लौकी में मौजूद क़ुदरती विटामिन सी, सोडियम, पोटाशियम और फ़ौलाद न सिर्फ़ त़ाक़त बख़्श साबित होता है बल्कि इस का रोज़ाना का

इस्ति'माल पेट के मुख़्तलिफ़ अमराज़ के ख़िलाफ़ मुअस्सर हिफ़ाज़त भी फ़राहम करता है। ﴾2﴿ लौकी में पाए जाने वाले अज्ज़ा की तासीर क़ुदरती तौ़र पर ठन्डी होती है जो गरमी का असर कम करने के साथ साथ थकन का एह़सास भी घटा देती है। ﴾3﴿ लौकी खाने से ख़ूब भूक लगती है और कमज़ोरी दूर होती है। ﴾4﴿ क़ब्ज़ के मरीज़ों के लिये लौकी बहुत फ़ाएदे मन्द है। ﴾5﴿ कद्दू जिगर के दर्द को दूर करने में मुफ़ीद है। ﴾6﴿ पेशाब के अमराज़, मे'दे के अमराज़ और यरक़ान (पीलिया, JAUNDICE) के मरज़ में बहुत फ़ाएदा देता है। ﴾7﴿ इस के बीजों का तेल दर्दे सर और सर के बालों के लिये बहुत मुफ़ीद है और नींद लाता है।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 23, अस्साफ़्फ़ात, तह़्तल आयह : 146, 8/351)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अभी हम ने सुना कि लौकी शरीफ़ हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी में बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم भी इस को इन्तिहाई शौक़ से खाना पसन्द करते थे। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी लौकी शरीफ़ को अपनी ग़िज़ा में शामिल करें, हमारा तो बस येही ज़ेह्न होना चाहिये कि जो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द है वोही अपनी पसन्द और जो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ना पसन्द है वोही अपनी ना पसन्द, चूंकि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कद्दू शरीफ़ से अपनी पसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमाया तो हमें भी कद्दू शरीफ़ को पसन्द करना और इसे सुन्नत की निय्यत से शौक़ से खाना चाहिये। हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गाने सुनना ना पसन्द है तो हमें भी ना पसन्द है। बहर ह़ाल अगर हम ने येह उसूल अपनी ज़िन्दगी पर नाफ़िज़ कर लिया तो اِنْ شَآءَاللهُ काम्याबी हमारा मुक़द्दर बन जाएगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का रब्बे करीम की ज़ात पर बहुत कामिल ईमान होता था, येह ह़ज़रात तंगदस्ती से नहीं डरते, फ़ाक़े करते हैं तो **अल्लाह** पाक इन की मदद करता है, लिहाज़ा ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! तंगदस्ती आती है तो आए मगर हमें इस से घबराना नहीं चाहिये। तंगदस्ती का ख़ौफ़ निकालने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के वाक़िआ़त पढ़ते और सुनते रहिये। याद रखिये ! येह मुशाहदा है कि जो दुन्या से दूर भागता है दुन्या ज़लील हो कर उस के क़दमों में आती है। हमें दुन्यावी मन्सब और मालो दौलत को पाने की कोशिशें करने वालों से सबक़ लेना चाहिये जो एक सीट जीतने की ख़ातिर लाख जतन करते हैं मगर बा'ज़ इस से पहले ही मौत के घाट उतर जाते हैं। याद रखिये ! दौलत का नशा इन्तिहाई ख़तरनाक है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो और उस का माल है जिस का कोई माल न हो और इस के लिये वोह जम्अ़ करता है जिस में अ़क़्ल न हो।" (شعب الایمان، 7/375، حدیث:10638) हमें दुन्या, माले दुन्या और दुन्यावी मन्सब के पीछे भागने, तंगदस्ती से ख़ौफ़ खाने, कम वसाइल और ग़ुर्बत का रोना रोते रहने के बजाए सब्रो क़नाअ़त और तवक्कुल अ़लल्लाह वाली ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये कि येही हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने हमें सिखाया है। आइये ! इस ज़िम्न में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की इन्फ़िरादी कोशिश का एक ह़सीन वाक़िआ़ सुनिये और नसीह़त ह़ासिल कीजिये चुनान्चे

तंगदस्ती की शिकायत करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सादाते किराम में से एक साह़िब ज़ादे गर्दिशे अय्याम की ज़द में आ कर तंगदस्ती में मुब्तला थे। वोह

मेरे पास तशरीफ़ लाते और अपने ह़ालात से दिल बरदाश्ता हो कर मुफ़्लिसी व ग़ुर्बत की शिकायत किया करते। एक दिन जब वोह बहुत ही परेशान व मग़मूम थे मैं ने उन से कहा : साहिब ज़ादे ! येह इर्शाद फ़रमाइये कि जिस औ़रत को बाप ने त़लाक़ दे दी हो, क्या वोह बेटे के लिये ह़लाल हो सकती है ? उन्हों ने फ़रमाया : नहीं। मैं ने कहा : एक मरतबा आप के जद्दे आ'ला अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने तन्हाई में अपने चेह्रए मुबारका पर हाथ फेर कर इर्शाद फ़रमाया : ऐ दुन्या ! किसी और को धोका दे, मैं ने तुझे ऐसी त़लाक़ दी जिस में कभी रज्अ़त (या'नी दोबारा लौटना) नहीं। शहज़ादे हुज़ूर ! क्या इस क़ौल के बा'द भी सादाते किराम का ग़ुर्बतो इफ़्लास में मुब्तला होना तअ़ज्जुब की बात है ! वोह कहने लगे : वल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक की क़सम) ! आप की इन बातों ने मुझे दिली सुकून बख़्श दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! इस के बा'द शहज़ादे ने कभी भी अपनी ग़ुर्बत का शिक्वा न किया। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 162 मुलख़्ख़सन)

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कभी भी मुश्किल ह़ालात और तंगदस्ती से घबरा कर ज़ियादा परेशान नहीं होना चाहिये। काम्याबी दुन्यवी मालो दौलत की कसरत में नहीं बल्कि **अल्लाह** करीम की रिज़ा पर राज़ी रहने में है। येह भी मा'लूम हुवा जब भी किसी इस्लामी भाई की इस्लाह़ की ज़रूरत पड़े तो बड़ी ह़िक्मते अ़मली से उस के मर्तबा व मक़ाम का लिह़ाज़ करते हुए नेकी की दा'वत देनी चाहिये जैसा कि हमारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने कितने प्यार भरे अन्दाज़ में सय्यिद ज़ादे पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन की इस्लाह़ की, कोई

ऐसा लफ़्ज़ न बोला जिस से उन को शरमिन्दगी हो और न ही सख़्त लहजा इस्ति'माल किया। **अल्लाह** पाक हमें भी मीठे अन्दाज़ में नेकी की दा'वत की धूम मचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

याद रहे ! ऐसी तंगदस्ती ज़रूर **अल्लाह** पाक की एक बहुत बड़ी ने'मत है जो गुनाहों से रुकने का सबब हो और **अल्लाह** पाक की याद से ग़ाफ़िल न करे नीज़ बन्दा सब्रो शुक्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ारे। मगर अफ़्सोस ! बा'ज़ नादान तंगदस्ती में मुब्तला हो कर बे सब्री करते हुए शिक्वे शिकायात और रब्बे करीम की नाशुक्री व ना फ़रमानी पर उतर आते हैं और बा'ज़ बे ख़ौफ़ तो مَعَاذَاللہ कुफ़्रिय्या कलिमात तक बक जाते हैं। तंगदस्ती व मोहताजी में मुब्तला शख़्स को चाहिये कि वोह **अल्लाह** पाक की बारगाह में ऐसी तंगदस्ती से पनाह तलब करता रहे जो उसे शिक्वे शिकायात, रब्बे करीम की नाशुक्री व ना फ़रमानी और कुफ़्रिय्या कलिमात बकने पर उभारे और ईमान की बरबादी का सबब बन जाए।

मक्रे शैतान से तू बचाना साथ ईमां के मुझ को उठाना
नज़्अ़ में दीदे बदरुद्दुजा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 128)

ग़रीब व तंगदस्त और मिस्कीन शख़्स अगर अपनी ग़ुर्बत व मुफ़्लिसी पर सब्र, सब्र और सिर्फ़ सब्र करे और लोगों के आगे शिक्वे शिकायात कर के बे सब्री का मुज़ाहरा न करे तो उसे बहुत ज़ियादा सवाब मिलता है। ग़रीब इस लिये भी फ़ाएदे में है कि उस के पास गुनाहों की दुन्यावी आसाइशें, आलात व अस्बाब और वसाइल नहीं होते जब कि कई मालदारों और दुन्यादारों के पास येह सब चीज़ें होती हैं। अब बा'ज़ ग़रीब

लोग जब मालदारों और दुन्यादारों की ऐ़शो अ़य्याशियां और सहूलियात को देखते हैं तो उन के दिलों में कुछ इस त़रह़ की ख़्वाहिशात अंगड़ाइयां लेने लगती हैं : मसलन ऐ काश ! मेरे पास भी नेट होता, नेट वाला मोबाइल होता, कम्पयूटर होता, टीवी होता तो मैं भी इन की त़रह़ फ़िल्में ड्रामे देखता, मूसीक़ी सुनता, अपनी गाड़ी में उ़म्दा क़िस्म का टेप लगवा कर गाने बजाता वग़ैरा ।

याद रखिये ! गुनाह का पक्का इरादा करने से इन्सान गुनाहगार हो जाता है अगर्चे वोह गुनाह न कर सका हो चुनान्चे "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" के सफ़ह़ा नम्बर 286 पर लिखा है : अगर कोई मज्मअ़ ख़ैर का हो (या'नी नेक लोगों का इज्तिमाअ़ हो) और वोह न जाने पाया और ख़बर मिलने पर उस ने अफ़्सोस किया तो उतना ही सवाब मिलेगा जितना ह़ाज़िरीन को और अगर मज्मअ़ शर का हो (या'नी बुरे लोगों का इज्तिमाअ़ हो) उस ने अपने न जाने पर अफ़्सोस किया तो जो गुनाह उन ह़ाज़िरीन (वहां मौजूद लोगों) पर होगा वोह इस पर भी (होगा) । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 286) नीज़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा नम्बर 615 पर लिखा है : अगर गुनाह के काम का बिल्कुल पक्का इरादा कर लिया जिस को "अ़ज़्म" कहते हैं तो येह भी एक गुनाह है अगर्चे जिस गुनाह का अ़ज़्म (या'नी पक्का इरादा) किया था उसे न किया हो । (बहारे शरीअ़त, 3/615, ह़िस्सा : 16) पक्का इरादा अ़ज़्म कहलाता है । जब ज़ेह्न किसी चीज़ को ह़ासिल करने के लिये पक्का इरादा कर ले, नफ़्स को उस की जानिब माइल कर ले और उस को ह़ासिल करने की निय्यत भी कर ले तो येह अ़ज़्म (या'नी पक्का इरादा) कहलाता है । इस सूरत में अगर नेकी का इरादा है तो इस पर सवाब मिलेगा

और गुनाह का इरादा था तो इस पर पकड़ होगी, अगर्चे किसी सबब से वोह उस गुनाह को न कर सका। (تفسیر صاوی، پ 3، البقرۃ، تحت الآیۃ: 284، 1/243 ماخوذاً) इस बात को यूं समझिये कि जुमे'रात का दिन तशरीफ़ लाया और शबे जुमुआ़ को किसी का हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी का मा'मूल था मगर वोह बेचारा किसी काम में मश्ग़ूल हो गया, उसे याद ही न रहा कि इसे तो इज्तिमाअ़ में जाना था, अचानक उसे याद आया कि आज तो शबे जुमुआ़ है और मुझे हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करनी थी लेकिन तब तक इज्तिमाअ़ का वक़्त ख़त्म हो चुका था। अब अगर वाक़ेई उसे इज्तिमाअ़ की ह़ाज़िरी से मह़रूमी का अफ़्सोस हुवा तो اِنْ شَآءَاللہ उसे शिर्कत का सवाब मिल जाएगा, लेकिन अगर किसी ने गुनाह का पक्का इरादा किया मसलन फ़िल्म देखने की ग़रज़ से सिनेमा घर की त़रफ़ चला मगर जब वहां पहुंचा तो पता चला कि लोग तो फ़िल्म देख कर वापस आ रहे हैं, किसी ने बताया कि फ़िल्म तो ख़त्म हो चुकी है, येह सुन कर उस ने फ़िल्म न देखने पर अफ़्सोस का इज़्हार किया तो उसे फ़िल्म देखने के पक्के इरादे का गुनाह मिलेगा।

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही
गुनाहों के अमराज़ से नीम जां हूं पए मुर्शिदी दे शिफ़ा या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

जिस त़रह़ लोग तंगदस्ती का रोना रोते हैं इसी त़रह़ किसी अ़ज़ीज़ के इन्तिक़ाल पर बे सब्री करना और रोना पीटना भी बहुत आ़म हो चुका है, ख़ुसूसन औ़रतें मय्यित पर बहुत ज़ियादा रोती पीटती और चीख़ती

चिल्लाती हैं। अगर किसी का हस्पताल में इन्तिक़ाल हो जाए तो हस्पताल में ख़ूब हंगामा किया जाता और तोड़ फोड़ मचाई जाती है, डॉक्टर्ज़ और हस्पताल के अ़मले को धम्कियां और गालियां दी जाती हैं और उन के ख़िलाफ़ ना'रे बाज़ी की जाती है ह़ालां कि इस त़रह़ करने से यक़ीनन मरने वाला ज़िन्दा नहीं हो सकता। इन्सान की मौत उस के पसमान्दगान के लिये ज़बर दस्त इम्तिह़ान का बाइ़स होती है। ऐसे मौक़अ़ पर सब्र करना और बिल ख़ुसूस ज़बान को क़ाबू में रखना ज़रूरी है। बे सब्री से सब्र का अज्र तो ज़ाएअ़ हो सकता है मगर मरने वाला पलट कर नहीं आ सकता।

आंखें रो रो के सुजाने वाले जाने वाले नहीं आने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 160)

याद रहे! मय्यित के ग़म में आंसू बहाने में ह़रज नहीं अलबत्ता नौह़ा करना (या'नी मय्यित के औसाफ़ मुबालग़े के साथ बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को बैन कहते हैं) ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, 1/854, ह़िस्सा : 4 माख़ूज़न) रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नौह़ा करने वालियों की क़ियामत के दिन दोज़ख़ में दो सफ़ें बनाई जाएंगी, एक सफ़ दोज़ख़ियों की दाईं त़रफ़, दूसरी बाईं त़रफ़, वोह दोज़ख़ियों पर यूं भौंकती रहेंगी जैसे कुत्ते भौंकते हैं। (معجم اوسط، 4/66، حدیث:5229) एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : नौह़ा करने वाली ने अगर मरने से पहले तौबा न की तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ खड़ी की जाएगी कि उस पर एक कुरता क़त़रान (या'नी राल) का होगा और एक कुरता जरब (या'नी खुजली) का। (مسلم، ص362، حدیث:934)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : राल में आग बहुत जल्द लगती है और सख़्त गर्म भी होती है। मा'लूम

होता है कि नाएहा (या'नी नौहा करने वाली) पर उस दिन ख़ारिश का अ़ज़ाब मुसल्लत़ होगा क्यूं कि वोह नौहा कर के लोगों को मजरूह़ (या'नी उन के दिल ग़मगीन व ज़ख़्मी) करती थी तो क़ियामत के दिन उसे ख़ारिश से ज़ख़्मी किया जाएगा। इस से मा'लूम हुवा नौहा ख़्वाह अ़मली हो या क़ौली सख़्त ह़राम है। चूंकि अक्सर औ़रतें ही नौहा करती हैं इस लिये उ़मूमन नाएहा तानीस (मुअन्नस) का सीग़ा (या'नी कलिमा इर्शाद) फ़रमाया।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/503)

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि किसी के इन्तिक़ाल पर बा'ज़ ख़्वातीन दिल ही दिल में ख़ुश हो रही होती हैं, इस लिये कि उन की मरने वाले से अनबन चल रही थी, नीज़ ऐसी औ़रतें ज़ियादा चिल्लाती और रोती हैं, लेकिन दिल में ख़ुशी के लड्डू फूट रहे होते हैं कि अच्छा हुवा मर गया, हमारी तो जान छूटी, येह तंग बहुत करता था, बे पर्दगी और फ़ेशन नहीं करने देता था, शर्ई पर्दा करवाता था, फ़िल्में ड्रामे और गाने बाजे देखने सुनने पर पाबन्दी लगाई हुई थी वग़ैरा वग़ैरा।

अफ़्सोस ! वफ़ा किसी जाने वाले की त़रह़ जा चुकी है, भाई भाई का नहीं है, आए दिन ऐसी दर्दनाक ख़बरें सुनने को मिलती हैं कि बेटों ने ही अपने सगे बाप को मार दिया, भाई ने भाई को क़त्ल कर दिया, ज़मीन व जायदाद के झगड़े में कई बेटों ने बाप को इस लिये मार दिया कि उस की जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लें और मज़े करें, ज़मीन व जायदाद तो हाथ क्या आती उलटा उन्हें हथकड़ियां लग जाती हैं, जेल की सलाख़ों के पीछे सड़ते हैं बिल आख़िर सज़ाए मौत उन का मुक़द्दर बन जाती है।

है येह दुन्या बेवफ़ा आख़िर फ़ना — न रहा इस में गदा न बादशाह
मौत ठहरी आने वाली आएगी — जान ठहरी जाने वाली जाएगी
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर — जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर
जब अंधेरी क़ब्र में तू जाएगा — ग़ाफ़िल इन्सान याद रख पछताएगा
रोएगा, चिल्लाएगा, घबराएगा — काम मालो ज़र वहां न आएगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुढ़ापे में इन्सान के आ'ज़ा बेकार हो जाते हैं, रिश्तेदार साथ छोड़ जाते हैं, अपने पराए सब सताते हैं, बीमारियां और आज़्माइशें चारों त़रफ़ से घेर लेती हैं, इन्सान हर चीज़ और हर शख़्स से ना उम्मीद और मायूस हो जाता है मगर अफ़्सोस ! माल की मह़ब्बत उस के दिल में जवान रहती है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : आदमी बूढ़ा हो जाता है मगर उस की दो चीज़ें जवान रहती हैं : ﴾1﴿ ह़िर्स ﴾2﴿ लम्बी उम्मीद। (مسلم، ص 404، حدیث: 1047) एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : अगर इब्ने आदम के पास सोने की दो वादियां भी हों तब भी येह तीसरी की ख़्वाहिश करेगा और इब्ने आदम का पेट क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है। (مسلم، ص 842، حدیث: 1048 ملخصاً) कई बूढ़े लोग बुढ़ापे में भी बिला ज़रूरत सख़्त मेह़नत करते हैं, ह़ालां कि बुढ़ापे के सबब उन की खाल लटकी हुई होती है, पूछा जाए कि कहां जा रहे हैं ? तो जवाब मिलता है : दुकान पर जा रहे हैं और ह़ाल येह होता है कि उन्हें नमाज़ की फ़ुरसत नहीं मिलती, दाढ़ी शरीफ़ नहीं रखते, तरग़ीब दिलाई जाए तो कहते हैं दुआ़ करें। उन पर नसीह़त की कोई बात असर नहीं करती, अगर बार बार समझाएं तो कहते हैं : हमें देर हो रही है और फिर दुकान पर जा कर दुन्यादारी में मसरूफ़ हो जाते हैं। फिर अख़्बार में आता है कि फ़ुलां को बॉन्ड्ज़ की गड्डियां छीनने की कोशिश में गोली मार दी गई तो यूं बेचारे के बॉन्ड्ज़ भी छिन जाते हैं

और उसे मौत के घाट भी उतार दिया जाता है। अब ता'ज़ियत करने वालों का तांता बंध जाता है, अपने पराए सब मगरमच्छ के आंसू बहा रहे होते हैं, एह़तिजाज होता है कि एफ़आईआर काटी जाए, क़ातिलों को पकड़ा जाए और सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाए वग़ैरा वग़ैरा। कुछ दिनों बा'द मुआ़मला रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो जाता है और लोग उस सानिह़े को भूल कर अपने अपने कामों में मश्ग़ूल हो जाते हैं।

यूं ही बा'ज़ ताजिरों या उन के बच्चों को इग़वाकार इग़वा कर के तावान की रक़म त़लब करते हैं और तावान न देने पर क़त्ल की धम्कियां देते हैं बल्कि अक्सर तो क़त्ल कर के लाश किसी कचरा कूंडी में फेंक जाते हैं। अगर कभी कोई ग़रीब हाथ लग जाए तो रोंग नम्बर समझ कर छोड़ जाते हैं कि येह ख़ुद कंगला है हमें क्या दे सकता है ? याद रहे ! मुत़्लक़न मालदार होना कोई ऐ़ब नहीं, अगर इन्सान माल के ज़रीए़ हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद पूरे करता है तो ऐसा माल उसे फ़ाएदा देगा वरना हलाकत में मुब्तला करेगा। जिस को दुन्या में आसाइशें दी जाती हैं उस पर आज़्माइशें भी सख़्त आती हैं ताकि लोगों की आंख खुले। ह़रीस इन्सान की ज़िन्दगी का बस एक ही मक़्सद होता है कि बस दुन्या संवर जाए चाहे इस की वज्ह से क़ब्र बरबाद हो जाए। इस लिये अपने नफ़्स पर कभी भी ए'तिमाद नहीं करना चाहिये, क्या मा'लूम कि दौलत आने के बा'द इन्सान दुन्या का हो कर रह जाए, हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद में कोताही कर जाए, फ़िक्रे आख़िरत और क़ब्रो आख़िरत के मुआ़मलात से ग़ाफ़िल हो जाए, नमाज़ों की पाबन्दी उठ जाए, फ़ेशन परस्ती और ह़राम ख़ोरी में मुब्तला हो जाए, **अल्लाह** पाक की याद से ग़ाफ़िल हो जाए, तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रो दुरूद और दीगर नेक कामों से दूर हो कर माल के नशे में गुम हो जाए, फिर डाकू, ह़ासिदीन और भत्ता ख़ोर पीछे पड़ जाएं वग़ैरा।

न मुझ को आज़्मा दुन्या का मालो ज़र अ़ता कर के अ़ता कर अपना ग़म और चश्मे गिरयां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 340)

या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें मालो दौलत दे कर इम्तिहान में न डाल दीजियेगा क्यूं कि हम **अल्लाह** पाक की राह में ख़र्च नहीं कर सकेंगे, हमें मालो ज़र न दें बल्कि हमें अपना ग़म और अपनी याद और अपनी महब्बत में रोने वाली आंख दे दीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तंगदस्ती दूर करने के नुस्ख़े

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना बहुत से लोग बे रोज़गारी का शिकार नज़र आते हैं और जो साहिबे रोज़गार हैं वोह तंगदस्ती की वज्ह से त़रह़ त़रह़ की आफ़तों में गिरिफ़्तार हैं । अगर हम नमाज़े चाश्त पढ़ने की आ़दत बना लें तो दीगर फ़वाइद के साथ साथ اِنْ شَآءَاللّٰه हमारे रिज़्क़े ह़लाल में भी बहुत बरकत होगी क्यूं कि ह़ुसूले रिज़्क़ और तंगदस्ती को दूर करने के लिये नमाज़े चाश्त पढ़ना बेह़द मुफ़ीद और मुजर्रब है चुनान्चे ह़ज़रते शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम ने पांच चीज़ों की ख़्वाहिश की तो वोह हमें पांच चीज़ों में दस्त याब हुईं (उन में से एक येह भी है कि) जब हम ने रोज़ी में बरकत त़लब की तो वोह हमें नमाज़े चाश्त पढ़ने में मुयस्सर आई (या'नी उस के ज़रीए रिज़्क़ में बरकत पाई) । (نزہۃ المجالس، 1/166 ملتقطاً)

इसी त़रह़ सूरए वाक़िअ़ह का हमेशा बिल ख़ुसूस बा'दे मग़रिब पाबन्दी से पढ़ना । नमाज़े तहज्जुद पढ़ते रहना, तौबा करते रहना और फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ों के दरमियान सत्तर बार इस्तिग़्फ़ार करना, घर में आयतुल कुरसी और सूरए इख़्लास पढ़ना और ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ना रिज़्क़ में बरकत के अस्बाब में से है । (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 609, 610 मुलख़्ख़सन)

अगले हफ़्ते का रिसाला